

आत्मशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-16 नवम्बर-II, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू '8.00

आध्यात्मिक विकास ही सर्वांगीण विकास की कुंजी - पी.जे.कुरियन आंतरिक शक्तियों को बढ़ाने के लिए राजयोग मेडिटेशन आवश्यक - दादी जानकी

नई दिल्ली। आंतरिक शक्तियों को विकसित करने के लिए सत्यता, शान्ति और प्रेम जैसे बुनियादी मूल्यों को जीवन में अपनाना होगा, जिससे प्रत्येक व्यक्ति के जीवन एवं समाज में खुशहाली लायी जा सके। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने संयुक्त राष्ट्र की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर पार्लियामेंट हाऊस एनेक्सी में संयुक्त रूप से 'आंतरिक शक्तियों के विकास' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अपने आशीवर्चन देते हुए प्रकट किये।

उन्होंने कहा कि स्वयं में और समाज में आंतरिक शक्तियों, स्वास्थ्य, सद्भाव और खुशी को बढ़ाने के लिए नियमित रूप से आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग ध्यान का अभ्यास करना आवश्यक है।

मुख्य अतिथि के रूप में राज्य सभा के उपाध्यक्ष पी.जे.कुरियन ने संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्राष्ट्रीय शान्ति



'आंतरिक शक्तियों के विकास' विषयक कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. आशा, सम्बोधित करते हुए श्रीमती किरन मेहरा, दादी हृदयमोहिनी, दादी जानकी, पी.जे. कुरियन व ब्र.कु. जयंती।

स्थापना एवं विकासात्मक भूमिकाओं की सराहना करते हुए कहा कि सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य और मानव अधिकार के लिए काम करने के साथ-साथ यह संघ लोगों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा दे जोकि सर्वांगीण विकास की कुंजी है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में आयी भारत-भुटान में संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र की निदेशिका श्रीमती किरन मेहरा ने अपने वक्तव्य में कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ ब्रह्माकुमारीज़ जैसे विश्व व्यापी गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर शान्ति, मूल्य शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सतत् विकास की दिशा

में आगे बढ़कर सुदृढ़ मानव समाज एवं एक बेहतर विश्व निर्माण के लिए कटिबद्ध है।

ब्रह्माकुमारीज़ के यूरोप एवं मध्य पूर्व की निदेशिका ब्र.कु. जयंती ने लोगों में मानवीय मूल्यों एवं आंतरिक शक्तियों की वृद्धि के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग ध्यान के

नियमित अभ्यास पर जोर दिया। उन्होंने सभा में उपस्थित विशिष्ट रूप से आमंत्रित समाज के विभिन्न व्यवसायों एवं वर्गों के लगभग दो सौ लोगों को कुछ मिनट राजयोग ध्यान द्वारा आंतरिक शान्ति एवं शक्ति की अनुभूति कराई।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने अपने आशीवर्चन दिये तथा सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक डी.आर.कार्तिकेयन, न्यू दिल्ली टाइम्स की मुख्य संपादिका डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव और ओ.आर.सी.गुडगांव की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही इस कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा पिछले सात दशकों में संयुक्त राष्ट्र और ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा समाज में मूल्यों और शान्ति की पुनर्स्थापना की दिशा में गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया।

जीवन में जो घटता है वो कर्मों के ही अधीन है

बड़ौदा-गुज.। यदि यह सब भगवान कर रहा है तो वह अच्छा ही तो करेगा ना। जब हमारे साथ अच्छा होता है तो हम भगवान को अच्छा कहते हैं, बुरा होता है तो उसे कोसते हैं। जीवन में जो कुछ भी होता है वो अपने कर्मों के अधीन ही होता है। उक्त उद्गार ब्र.कु. शिवानी ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'माइंड बॉडी मेडिसिन' विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि जीवन में हम दुःखी इसलिए होते हैं क्योंकि हम वर्तमान को छोड़कर भूत और भविष्य में जीते हैं। जीवन में आज लोग सबसे अधिक परेशान डर से हैं, जिसके कारण बहुत सारी गलतियां कर रहे हैं। डर भी हमारे द्वारा ही की गई गलतियों का परिणाम है। यदि आपको जीवन में खुशी व आनंद चाहिए तो रोज़ अमृतवेला उठकर

'माइंड बॉडी मेडिसिन' विषय पर कॉन्फ्रेंस आयोजित

परमपिता से अपार शक्ति प्राप्त कीजिए। उन्होंने आगे कहा कि हर

सकता है। उन्होंने सभी से सुबह उठकर दिन का आरंभ सुदर विचारों

डॉक्टरों को कहा कि पहले कहते थे कि यह हमारा फैमिली डॉक्टर है।



कॉन्फ्रेंस का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. बनारसी, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. डॉ. अशोक मेहता, ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता व अतिथिगण।

व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं ही है। वे अपने कर्म को सुदर बना

के द्वारा करने का अनुरोध किया। उन्होंने इस कॉन्फ्रेंस में आये सभी

वे पूरा विश्वास रखते थे। हमें चाहिए कि आज भी सभी हमपर

उतना ही विश्वास कर सकें। धन की लालसा में कोई भी गलत कार्य हमसे ना हो जाये। हमें ज़रूरत है धन के साथ दुआओं की भी। इसलिए विशेष दुआओं पर ध्यान दें, पुण्य कर्मों पर ध्यान दें, धन अपने आप की आ जायेगा।

डॉ.अशोक मेहता ने आज के समय में मूल्यों की आवश्यकता बताते हुए कहा कि डॉक्टरों भी सारे दिन में थक जाते हैं, स्ट्रेस का अनुभव करते हैं, तो उन्हें भी राजयोग के अभ्यास की आवश्यकता है।

डॉ. मोहित गुप्ता ने साइन्स और स्पीरिचुअलिटी में बैलेन्स कैसे रखा जाये उस बारे में समझाया। बड़ौदा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. निरंजना ने सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. डॉ. बनारसी ने सभी का अभिनंदन किया।